राजदेव सिंह
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रूड़की – 247 667

निदेशक की कलम से.....

यह बड़े हर्ष का विषय है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रूड़की विगत 20–21 वर्षों से प्रकाशित की जा रही अपनी वार्षिक हिंदी पत्रिका **"प्रवाहिनी"** के 21वें अंक का प्रकाशन हिंदी दिवस के पावन अवसर पर करने जा रहा है। यद्यपि हिंदी मास के दौरान संस्थान में हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के दृष्टिकोण से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं तथापि हिंदी पत्रिका का प्रकाशन अपने आप में एक विशिष्ट कार्य है।

इस पत्रिका में वैज्ञानिक, तकनीकी, साहित्यिक एवं अन्य विधाओं से जुड़े लेखों के समावेश से सभी अधिकारियों व कर्मचारियों की हिंदी लेखन रूचि में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है और वे अपने सामान्य प्रकृति के कार्यों के साथ–साथ तकनीकी कार्यों में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में यह एक शुभ संकेत है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संचयन और जल का उचित प्रयोग जैसे विषय अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। संस्थान में जल से जुड़े हुए क्रिया–कलापों से संबंधित जानकारी आम जनता की समझ में आने वाली सरल भाषा में प्रदान की जानी चाहिए। जिस से हम अपने दायित्वों को और अधिक महत्वपूर्ण ढंग से पूरा कर सकते हैं। सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए सरकार ने अनेक सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध कराए हैं। कंप्यूटरों पर हिंदी में काम करने में अब कोई कठिनाई नहीं है, अलग से किसी हिंदी सॉफ्टवेयर के बिना कंप्यूटरों पर यूनिकोड एवं आई लिट समर्थित फांट्स के साथ आसानी से हिंदी में कार्य किया जा सकता है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत में पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण से लेकर विदेशों तक में बोली व समझी जाती है। मैं इस पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह करता हूं कि वें राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं कार्यान्वयन में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करें।

संस्थान का यह प्रयास रहा है कि **"प्रवाहिनी"** पत्रिका में संकलित किए जाने वाले लेखों को भाषा और साहित्य संबंधी विषयों तक ही सीमित न रखा जाए, अपितु इसमें तकनीकी एवं वैज्ञानिक विधाओं से संबंधित विद्वानों के आधुनिक ज्ञान संबंधी लेखों को भी शामिल किया जाए। **"प्रवाहिनी"** के प्रस्तुत अंक में भिन्न–भिन्न विषयों के लेखों को संकलित किया गया है।

"प्रवाहिनी" के इस अंक में संस्थान के पदाधिकारियों तथा उनके परिवारजनों के अलावा संस्थानेत्तर व्यक्तियों के ज्ञानवर्धक, रोचक एवं महत्वपूर्ण लेखों को शामिल किया गया है। लेखों में प्रयुक्त भाषा को सरल तथा सहज रखने का प्रयास किया गया है। मुझे विश्वास है कि यह अंक समस्त सुधी पाठकों के लिए रोचक तथा उपयोगी सिद्ध होगा।

मैं **"प्रवाहिनी"** के इस अंक के संपादन, टंकण, प्रूफ रीडिंग एवं प्रकाशन संबंधी कार्यों से जुड़े पदाधिकारियों तथा विद्वत लेखकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं। मैं पत्रिका के इस अंक की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूं।

(राजदेव सिंह)